Vol 7 Issue 5 June 2017

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

# *Indian Streams Research Journal*

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

# Welcome to ISRJ

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

**Regional Editor**

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

## International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

## Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org**

ISSN: 2230-7850 IMPACT FACTOR : 5.1651(UIF)

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | JUNE - 2017

# विभिन्न क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं की समस्यायें एवं उनका निराकरण

कुमारी कविता राय
गृह विज्ञान विभाग ,ल.ना.मि.वि.वि.,दरभंगा।

## प्रस्तावना :

आज के इस युग में महिलाओं की स्थिति में परंपरागत स्तर पर काफी परिवर्तन आया है। यद्यपि महिलाओं के समक्ष प्राचीन काल से ही अनेक चुनौतियाँ रही हैं किन्तु महिलाएं हर चुनौती को स्वीकार करते हुए निरंतर अपनी स्थिति को मजबूत करने की दिशा में अग्रसर रही हैं। और इसी का परिणाम है कि आज महिलाएं पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

महिलाओं की बहुआयामी उपलब्धियों तथा समतामूलक व्यापक संवैधाकि तथा कानूनी प्रावधानों के बावजूद कुछ भाग्यशालिनी महिलाएं ही उपब्धियों के शिखर तक पहुँच पाती हैं।[1]

आधुनिक काल महिला सशक्तिकरण का काल है। आज महिलाएं अपने आप को सशक्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ चुकी हैं और महिलाओं की वर्तमान स्थिति को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि महिलाओं का सशक्तिकरण सकारात्मक रूप में हुआ है। सरकारी प्रयासों के साथ–साथ महिलाओं के निजी आत्मविश्वास ने महिलाअें को काफी सशक्त बनाया है। महिलाओं के सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक रूप से सबल बनाना है, उनकी क्षमताओं में नित विकास करना है ताकि वे पुरूषों के कदम से कदम मिलाकर चल सकें और किसी चीज के लिए वे पुरूषों के मोहताज न बनें।

मौलिक अधिकारों के प्रतिपादन के बावजूद जमीनी हकीकत यह है कि पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं को पुरूषों की तुलना में निम्नतर स्थान प्राप्त है और उन्हें अपने अधिकारों के उपभोग में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।[2]

आत्मनिर्भरता वह कुंजी है जो मनुष्य के लिए सफलता का द्वार खोलती है। नई–नई उपलब्धियां आत्मनिर्भरता से ही प्राप्त हो सकती है जो जीवन में उमंग और उत्साह का संचार करती है और अधिक से अधिक दृढ़ इच्छाशक्ति का विकास करती है।

आज की महिलाएं अपने आप को आर्थिक रूप से सजग और सबल बनाने की दिशा में अग्रसर हैं आज महिलाओं की बड़ी संख्या घरेलू जिम्मेदारियों के निर्वहन करने के साथ–साथ बाहर अर्थिक उपार्जन की प्रक्रिया में भी संलग्न रहती है। आज काफी संख्या में महिलाएं सरकारी , अर्द्धसरकारी और निजी क्षेत्रों में कार्यरत हैं और दिनानुदिन उनकी संख्या में इजाफा हो रहा है।

भारत के आर्थिक विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान हैं, लेकिन दुर्भाग्य से इस योगदान को कभी मान्यता नहीं दी गयी है।[3]

किन्तु महिलाएं जहाँ आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में अग्रसर हो रही हैं वहीं उनके समक्ष कुछ नवीन समस्याएं भी उपस्थित हो रही हैं। चूंकि अबतक महिलाओं का जीवन घर तक ही सीमित रहा है। किन्तु आज उनके ठोस कदम घर से बाहर भी निकलने लगे हैं इससे उनके समक्ष कई नई और अपरिचित समस्याएं उत्पन्न हो गयी हैं।

महिलाओं का परंपरागत कार्यस्थल घर ही रहा है, किन्तु आज उन्हें घर और बाहर दोनों जगह के कार्यों को सम्पन्न करना पड़ता है। ऐसे में सर्वप्रथम उन्हें घर में उत्पन्न समस्याओं से ही जूझना पड़ता है। आमतौर पर बड़े बुर्जुग महिलाओं को चारदिवारी से बाहर निकलने को उचित नही मानते और प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में इसका विरोध करते हैं। साथ ही यदि परिवार का स्वरूप एकल है तो उन्हें घरेलू कार्यों को सम्पन्न करते हुए बाहर कार्यों को करना होता है। अर्थात उनका कार्यभारत और जिम्मेदारियाँ दुगुनी हो जाती है। दोहरे कार्यभारों के निर्वहन के कारण इसका प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ता है और ये कई मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं से जूझने लगती है। घर के लोगों की अपेक्षाएं पूर्ववत रहती हैं और बाहर के कार्यों की अतिरिक्त जिम्मेदारी आ जाती है। महिलाओं चाहिए कि इस तरह की समस्याओं से निजात पाने के लिए वे अपने कार्यों के साथ–साथ अपने स्वस्थ्य पर भी पूरा ध्यान दें और अपने दैनिक जीवन में पौष्टिक आहार सम्मिलित करें। महिलाअें में अक्सर हिमोग्लोबिन की कमी की समस्या होती है जिसका प्रभाव उनकी कार्यदक्षता पर पड़ता है। महिलाएं जब स्वस्थ रहेंगी तभी वे इतनी जिम्मेदारियों को निभा सकेंगे, क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है तथा स्वास्थ्य का सीधा प्रभाव कार्यक्षमता पर पड़ता है।

महिलाओं की कई घरेलू समस्याओं में पुरूष मानसिकता भी कारण होती है। यदि महिलाएं कामकाजी हैं और वे कहीं आर्थिक उपार्जन में संलग्न हैं तो घर के पुरूषों को चाहिए कि वे घरेलू कार्यों के निर्वहन में सहयोग दें। कार्य उचित बटवारा होने से कार्य के संपन्न होने में व्यय होने वाले वाली उर्जा का भी बंटवारा हो जाता है और बोझ हल्का हो जाता है। यदि थोड़ी मदद भी की जाए तो महिलाओं को काफी सुविधा होगी और वे अपना कार्य सफलता पूर्वक बिना किसी अतिरिक्त तनाव के सम्पन्न कर पाएंगी।

कामकाजी महिलाओं को न सिर्फ घरेलू स्तर बल्कि कार्यस्थल पर भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सबसे प्रमुख और पहली समस्या उनके साथ होने वाली लिंगभेद की समस्या है। अभी भी कार्यस्थल पर महिलाओं की प्रतिभा को दोयम दर्जे का ही माना जाता है।

गांवों में कोई काम करने के बदले यदि पुरूष को 10 रूपये मिलते हैं तो उस काम के बदले महिला कामगार को मात्र 6 रूपये ही दिए जाते हैं।

यह भी तब जब समान कार्य के बदले समान मजदूरी को मौलिक अधिकार माना गया है।[4]

महिलाओं को उनकी प्रतिभा का समुचित आदर सर्वत्र नहीं मिल पाता है। साथ ही पुरूष मानसिकता से संपोषित समाज अभी भी महिलाओं को भोग्या ही मानती है। उनकी प्रतिभा, उनका कार्य के प्रति समर्पण तथा उनका हुनर मात्र इसलिए समुचित आदर प्राप्त नहीं कर पाता है क्योंकि वे महिलाएं हैं। उन्हें अभी भी उपभोग की जाने वाली एक वस्तु के रूप में ही देखा जाता है। ऐसे महिलाएं अपने कार्यस्थल पर सफोकेशन महसूस करती हैं और अपनी प्रतिभा का शत प्रतिशत उपयोग नहीं कर पाती हैं।

इसके लिए सामाजिक परिवर्तन आवश्यकता है। आज का युग स्त्री पुरूष समानता का युग है और इस सत्य को सभी पुरूषवादी समाज को स्वीकार करना होगा। यद्यपि काफी हद तक इसमें सुधार आया है और दृष्टि और चिंतन में बदलाव नजर भी आने लगा है। किन्तु अभी सोच में और परिवर्तन वांछित है। साथ ही स्त्रियों का भी यह दायित्व है कि वे स्वंय की प्रतिभा को कार्यस्थल पर पूर्णतया प्रदर्शित करें ताकि सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों का अंत हो सके।

आज का युग कम्प्यूटर और मोबाईल का युग है साथ ही मोबाईल पर विभिन्न प्रकार के सामाजिक साईट्स जैसे– फेसबुक, वाट्सअप, हाईक और ऐसे अनेक साईट्स हैं जिनके माध्यम से हम अपनी भावनाओं तथा संवेदनाओं की साझेदारी करते हैं महिलाओं को भी चाहिए कि ऐसी किसी भी माध्यम से अपनी भावनाओं और संवेदनाओं की साझेदारी के लिए उचित लोगों का ही चयन करें अन्यथा यह किसी भी महिला के लिए अहितकर भी प्रमाणित हो सकता है। विशेषकर कार्यस्थल पर सभी लोगों के साथ इस प्रकार के साझेदारी से बचना चाहिए।

अनुचित व्यवहारों, अनुचित हरकतों का अपने स्तर पर विरोध करें, जहां तक पुरूषों की मानसिकता का प्रश्न है, अन्याय अथवा अत्याचार करने वाला चाहे कोई कितना ही बड़ा क्यों न हो, उसकी मानसिकता चोर जैसी होती है। वह आपके विरोध के बाद किसी प्रकार का दु:साहस मुश्किल से ही जुटा पाता है।[5]

कई कामकाजी महिलाओं से बातचीत के क्रम में यह बात सामने आई की महिलाओं से मित्रता करने के लिए कार्यस्थल पर पूरूष अधिक उत्सुक दिखाई देते हैं। किन्तु सही रूप में संवेदनशील अथवा हितैषी काफी कम होते हैं। बाकी लोगों के लिए महिलाओं की दोस्ती उन्हें मानसिक यौनसुख प्राप्त करने के साधन मात्र होते हैं। ऐसे महिलाओं के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे दोस्ती अथवा संपर्क मात्र ऐसे लोगों से बनाएं जो सच्चे मन से उनकी मददगार हों।

महिलाएं घर से लेकर कार्यस्थल जाने और फिर कार्यस्थल पर कार्य करने से लेकर पुनः घर वापस आने तक अनेक प्रकार की समस्याओं से रूबरू होती हैं और इन सारी समस्याओं से वे तभी निजात पा सकती हैं। जब आत्मबल मजबूत और उन्हें स्वयं पर विश्वास हो।

सरकार को तभी कानून बनाना पड़ता है जब सामाजिक बंधन ढ़ीले पर जाते हैं। कानूनी डंडे से सजा का भय दिखाया जाता है, इधर ऐसे कानून बने है जिनका परिवार में सुख–चैन लाना है। ऐसा सोचा गया है कि घरेलू हिंसा निषेधात्मक कानून बनने पर घरेलू हिंसा समाप्त होगी? पर सचतो यह है कि इन कानूनों से सामाजिक समस्याएं कम नहीं होती। फिर भी कानून बनने आवश्यक हैं। पारिवारीक परेशानियों के लिए कितनी बार कोई कचही जाये कोर्ट का काम परिवार चलाना नहीं है। हर परिवार में पुलिस भी नहीं बैठाई जा सकती है। कानून का डंडा भय उत्पन्न करने के लिए है।

कार्यालय या किसी प्रतिष्ठान जहां महिलाएं काम करती हैं वहां आने–जाने के क्रम में भी अनेक प्रकार की कमेंट सुनने पड़ते हैं। किन्तु यदि महिलाएं खुद को निडर एवं साहसी बनाएं रखती हैं तो उन्हें भविष्य में इस तरह के कमेंट करने वाले स्वतः पीछा छोड़ देते हैं।

कहने का अभिप्राय महिलाओं को यद्यपि आरंभ सामान्य समस्यओं का तो सामना करना पड़ता ही है किन्तु वे अपनी सच्ची शिक्षा और आत्मबल के बल पर सारी समस्याएं हल कर लेती हैं। वस्तुतः महिला सशक्तिकरण का अभिप्राय यही है कि महिलाएं निर्भिकता से अपना कार्य करें और स्वयं पर किसी भी प्रकार का अनुचित दबाव महसूस न करें।

*संदर्भ ग्रन्थः–*

1. महिला सशक्तिकरण के सपने, कितने पूरे कितने अधूरे– डॉ. ईश्वरचन्द्र कुमार, पृ.सं.–2
2. वही पृ.सं.–49
3. कामकाजी महिलाएं : वास्तविक स्थिति– डॉ. रेणु त्रिपाठी, डॉ. अपर्णा त्रिपाठी, पृ.सं.–138
4. महिला विकास : एक मूल्यांकन– प्रो. मधुसूदन त्रिपाठी, पृ.सं.–129
5. कामकाजी महिलाएं : समस्या एवं समाधान– शीला सलूजा, चुन्नीलाल सलूजा, पृ.सं.–120

*कुमारी कविता राय*
*गृह विज्ञान विभाग ,ल.ना.मि.वि.वि.,दरभंगा।*

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org